

Chapter दस

देवताओं तथा असुरों के बीच युद्ध

दसवें अध्याय का सारांश इस प्रकार है—असुरों तथा देवताओं में ईर्ष्या होने के कारण युद्ध चलता

रहा। जब देवता असुरों की चाल से प्रायः हार गए और अत्यन्त खिन्न हो गए। तब भगवान् विष्णु उन सबके बीच प्रकट हुए।

देवता तथा असुर दोनों ही माया-सम्बन्धी कार्यकलापों में निपुण होते हैं लेकिन देवता भगवद्भक्त हैं जबकि असुर उनके सर्वथा विपरीत हैं। देवताओं तथा असुरों ने अमृत-प्राप्ति के लिए क्षीरसागर का मन्थन किया, किन्तु असुर भगवद्भक्त न होने के कारण इससे कोई लाभ प्राप्त न कर सके। देवताओं को अमृत पिलाकर भगवान् विष्णु गरुड़ पर चढ़कर अपने धाम वापस चले गये, किन्तु अत्यन्त दुखी होने के कारण असुरों ने पुनः देवताओं के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। विरोचन के पुत्र बलि महाराज असुरों के सेनापति बने। युद्ध के प्रारम्भ में देवताओं ने असुरों को हराने की तैयारी की। स्वर्ग के राजा इन्द्र ने बलि से और वायु, अग्नि, वरुण इत्यादि देवताओं ने अन्य असुर-नायकों से युद्ध किया। इस युद्ध में असुर पराजित हुए। मृत्यु से बचने के लिए उन्होंने तरह-तरह की भौतिक युक्तियों से देवताओं के पक्ष के सैनिकों को मारकर मायाजाल फैलाना शुरू किया। देवताओं ने अन्य कोई रास्ता न देखकर पुनः भगवान् विष्णु की शरण ली। तब उन्होंने प्रकट होकर असुरों के सारे मायाजाल को छिन्न-भिन्न कर डाला। असुरों के जिन वीरों ने भगवान् से युद्ध किया उनमें कालनेमि, माली, सुमाली तथा माल्यवान मुख्य थे। ये सभी भगवान् द्वारा मारे गये। इस तरह देवता सारे संकटों से मुक्त हो गये।

श्रीशुक उवाच

इति दानवदैतेया नाविन्दन्नमृतं नृप ।

युक्ताः कर्मणि यत्ताश्च वासुदेवपराङ्मुखाः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; इति—इस प्रकार; दानव-दैतेयाः—असुरों तथा दैत्यों ने; न—नहीं; अविन्दन्—वांछित फल प्राप्त किया; अमृतम्—अमृत; नृप—हे राजा; युक्ताः—सभी मिलकर; कर्मणि—मन्थन में; यत्ताः—पूर्ण मनोयोग से लगे हुए; च—तथा; वासुदेव—भगवान् कृष्ण के; पराङ्मुखाः—अभक्त होने के कारण।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजा! यद्यपि असुर तथा दैत्य पूरे मनोयोग तथा श्रम के साथ समुद्र-मन्थन में लगे थे, किन्तु भगवान् वासुदेव के भक्त न होने के कारण वे अमृत नहीं पी सके।

साधयित्वामृतं राजन्याययित्वा स्वकान्सुरान् ।
पश्यतां सर्वभूतानां ययौ गरुडवाहनः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

साधयित्वा—सम्पन्न करके; अमृतम्—अमृत की उत्पत्ति; राजन्—हे राजा; पाययित्वा—तथा पिलाकर; स्वकान्—अपने भक्तों; सुरान्—देवताओं को; पश्यताम्—उपस्थिति में; सर्व-भूतानाम्—सारे जीवों की; ययौ—चले गये; गरुड-वाहनः—गरुड़ द्वारा ले जाये जाने वाले भगवान्।

हे राजा! समुद्र-मन्थन का कार्य पूरा कर लेने तथा अपने प्रिय भक्त देवताओं को अमृत पिला लेने के बाद भगवान् ने उन सबके देखते-देखते वहाँ से विदा ली और गरुड़ पर चढ़कर अपने धाम चले गये।

सपत्नानां परामृद्धिं दृष्ट्वा ते दितिनन्दनाः ।
अमृष्यमाणा उत्पेतुर्देवान्प्रत्युद्यतायुधाः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

सपत्नानाम्—अपने प्रतिद्वन्द्वियों अर्थात् देवताओं का; पराम्—सर्वश्रेष्ठ; ऋद्धिम्—ऐश्वर्य; दृष्ट्वा—देखकर; ते—वे सब; दिति-नन्दनाः—दिति के पुत्र, दैत्यगण; अमृष्यमाणाः—न सह सकने के कारण; उत्पेतुः—दौड़े (उपद्रव मचाने के लिए); देवान्—देवताओं की ओर; प्रत्युद्यत-आयुधाः—अपने हथियार उठाकर।

देवताओं की विजय देखकर असुरगण उनके श्रेष्ठतर ऐश्वर्य को सहन न कर सके। अतः वे अपने-अपने हथियार उठाकर देवताओं की ओर दौड़ पड़े।

ततः सुरगणाः सर्वे सुधया पीतयैधिताः ।
प्रतिसंयुयुधुः शस्त्रैर्नारायणपदाश्रयाः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; सुर-गणाः—देवता; सर्वे—सभी; सुधया—अमृत से; पीतया—पिया हुआ; एधिताः—ऐसे पीने से उत्तेजित होकर; प्रतिसंयुयुधुः—उन्होंने असुरों पर जवाबी हमला किया; शस्त्रैः—शस्त्रों के द्वारा; नारायण-पद-आश्रयाः—उनका असली हथियार नारायण के चरणकमलों की शरण था।

तत्पश्चात् अमृत पीने से उत्तेजित देवताओं ने जो सदैव नारायण के चरणकमलों की शरण में रहते हैं असुरों पर प्रत्याक्रमण करने के लिए युद्ध की मनोवृत्ति से अपने विविध हथियारों का प्रयोग किया।

तत्र दैवासुरो नाम रणः परमदारुणः ।
रोधस्युदन्वतो राजंस्तुमुलो रोमहर्षणः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

तत्र—वहाँ (क्षीरसागर के तट पर); दैव—देवता; असुरः—असुर; नाम—नाम से; रणः—युद्ध; परम—अत्यन्त; दारुणः—भयानक; रोधसि—तट पर; उदन्वतः—क्षीरसागर के; राजन्—हे राजा; तुमुलः—कोलाहलपूर्ण; रोम-हर्षणः—शरीर के रोएँ खड़े हुए।

हे राजा! देवताओं तथा असुरों के मध्य क्षीरसागर के तट पर घमासान युद्ध शुरु हो गया।

यह युद्ध इतना भयंकर था कि इसके विषय में सुनने से ही शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

तत्रान्योन्यं सपत्नास्ते संरब्धमनसो रणे ।

समासाद्यासिभिर्बाणैर्निजघ्नुरिविधायुधैः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

तत्र—तत्पश्चात्; अन्योन्यम्—एक दूसरे से; सपत्नाः—सभी लड़ाकू बनकर; ते—वे; संरब्ध—अत्यन्त क्रुद्ध; मनसः—मन से; रणे—युद्ध में; समासाद्य—परस्पर लड़ने का अवसर पाकर; असिभिः—तलवार से; बाणैः—बाणों से; निजघ्नुः—एक दूसरे को मारने लगे; विविध-आयुधैः—विभिन्न प्रकार के हथियारों से।

उस युद्ध में दोनों ही दल मन ही मन अत्यन्त क्रुद्ध थे। वे शत्रुतावश एक दूसरे पर तलवारों, बाणों तथा अन्य विविध हथियारों से प्रहार करने लगे।

तात्पर्य : इस ब्रह्माण्ड में, न केवल इस लोक में अपितु उच्च लोकों में भी, सदा से दो प्रकार के मनुष्य रहे हैं। सूर्य तथा चन्द्र जैसे लोकों में आधिपत्य जमाने वाले सारे राजाओं के भी राहु जैसे शत्रु रहे हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा पर यदा-कदा राहु द्वारा आक्रमण किये जाने के कारण ही ग्रहण लगते हैं। असुरों तथा देवताओं की लड़ाई शाश्वत है। इसे तब तक नहीं रोका जा सकता जब तक दोनों पक्षों के बुद्धिमान् पुरुष कृष्णभावनाभावित न हो जाँए।

शङ्खतूर्यमृदङ्गानां भेरीडमरिणां महान् ।

हस्त्यश्वरथपत्तीनां नदतां निस्वनोऽभवत् ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

शङ्ख—शंखों का; तूर्य—बड़ी तुरहियों का; मृदङ्गानाम्—तथा ढोलों का; भेरीडमरिणाम्—भेरियों तथा डमरियों का; महान्—अत्यन्त कोलाहलपूर्ण; हस्ति—हाथियों का; अश्व—घोड़ों का; रथ-पत्तीनाम्—रथ पर या भूमि पर लड़ने वालों का; नदताम्—शब्द करते; निस्वनः—कोलाहल; अभवत्—हुआ।

शंखों, तुरहियों, ढोलों, भेरियों तथा डमरियों की आवाजों के साथ ही हाथियों, घोड़ों तथा रथ पर चढ़े और पैदल सिपाहियों से निकली ध्वनियों से कोलाहल मच गया।

रथिनो रथिभिस्तत्र पत्तिभिः सह पत्तयः ।

हया हयैरिभाश्रेभैः समसज्जन्त संयुगे ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

रथिनः—रथ पर आरूढ़; रथिभिः—शत्रुपक्ष के रथ पर आरूढ़ सैनिकों से; तत्र—युद्धस्थल में; पत्तिभिः—पैदल सेना के; सह—साथ; पत्तयः—शत्रुओं की पैदल सेना; हयाः—घोड़े; हयैः—घुड़सवार शत्रु सैनिकों से; इभाः—हाथी पर चढ़े सैनिक; च—तथा; इभैः—हाथी पर सवार शत्रु-सैनिकों से; समसज्जन्त—समान स्तर पर एक दूसरे से लड़ने लगे, भिड़ गये; संयुगे—युद्धस्थल में।

उस युद्धभूमि में रथी अपने विपक्षी रथियों से, पैदल सेना विपक्षी पैदल सेना से, अश्वारोही विपक्षी अश्वारोहियों से तथा हाथी पर सवार सैनिक विपक्षी हाथी पर सवार सैनिकों से भिड़ गये। इस प्रकार समान पक्षों में युद्ध होने लगा।

उष्ट्रैः केचिदिभैः केचिदपरे युयुधुः खरैः ।

केचिद्गौरमुखैरक्षैर्द्वीपिभिर्हरिभिर्भटाः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

उष्ट्रैः—ऊँट की पीठ पर; केचित्—कुछ व्यक्ति; इभैः—हाथी की पीठ पर; केचित्—कुछ व्यक्ति; अपरे—अन्य; युयुधुः—युद्ध में लगे हुए; खरैः—गधों की पीठ पर; केचित्—कुछ व्यक्ति; गौर-मुखैः—सफेद मुँह वाले बन्दरों पर; ऋक्षैः—लाल मुँह वाले बन्दरों (रीछों) पर; द्वीपिभिः—बाघों की पीठ पर; हरिभिः—सिंहों की पीठ पर; भटाः—सारे सैनिक।

कुछ सैनिक ऊँटों पर, कुछ हाथियों पर, कुछ गधों पर, कुछ सफेद मुँह वाले और लाल मुँह वाले बन्दरों पर, कुछ बाघों पर और कुछ सिंहों पर सवार होकर लड़ने लगे। इस प्रकार वे सब युद्ध में लगे थे।

गृध्रैः कङ्कैर्बकैरन्ये श्येनभासैस्तिमिङ्गलैः ।

शरभैर्महिषैः खड्गैर्गोवृषैर्गव्यारुणैः ॥ १० ॥

शिवाभिराखुभिः केचित्कृकलासैः शशैर्नरैः ।

बस्तैरेके कृष्णासारैर्हंसैरन्ये च सूकरैः ॥ ११ ॥

अन्ये जलस्थलखगैः सत्त्वैर्विकृतविग्रहैः ।

सेनयोरुभयो राजन्विविशुस्तेऽग्रतोऽग्रतः ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

गृध्रैः—गीधों की पीठ पर; कङ्कैः—चील्हों की पीठ पर; बकैः—बगुलों की पीठ पर; अन्ये—अन्य लोग; श्येन—बाजों की पीठ पर; भासैः—भास की पीठ पर; तिमिङ्गलैः—तिमिङ्गल नामक बड़ी मछली की पीठ पर; शरभैः—शरभों की पीठ पर; महिषैः—भैंसे की पीठ पर; खड्गैः—गैंडे की पीठ पर; गो—गायों की पीठ पर; वृषैः—बैलों की पीठ पर; गव्य-अरुणैः—गवयों तथा अरुणों की पीठ पर; शिवाभिः—सियारों की पीठ पर; आखुभिः—बड़े चूहों की पीठ पर; केचित्—कुछ लोग; कृकलासैः—बड़ी छिपकलियों पर; शशैः—खरहों की पीठ पर; नरैः—मनुष्यों की पीठ पर; बस्तैः—बकरों की पीठ पर; एके—कुछ; कृष्ण-सारैः—काले हिरनों की पीठ पर; हंसैः—हंसों की पीठ पर; अन्ये—अन्य; च—भी; सूकरैः—सुअरों की पीठ पर; अन्ये—अन्य; जल-स्थल-खगैः—जल, स्थल तथा आकाश में चलने वाले पशुओं से; सत्त्वैः—वाहन के रूप में प्रयुक्त प्राणियों से; विकृत—विरूपित हैं; विग्रहैः—ऐसे पशुओं द्वारा जिनके शरीर; सेनयोः—दोनों पक्षों के सैनिकों के; उभयोः—दोनों के; राजन्—हे राजा; विविशुः—प्रवेश किया; ते—वे सभी; अग्रतः अग्रतः—आमने-सामने जाते हुए।

हे राजा! कुछ सैनिक गीधों, चील्हों, बगुलों, बाजों तथा भास पक्षियों की पीठ पर बैठकर

लड़े। कुछ ने विशाल मत्स्यों (तिमि) को भी निगलने वाली तिमिंगलों की पीठ पर, कुछ ने सरभों की पीठ पर तो कुछ ने भैंसों, गैंडों, गायों, बैलों, बनगायों तथा अरुणों की पीठ पर सवार होकर युद्ध किया। अन्य लोगों ने सियारों, चूहों, छिपकलियों, खरहों, मनुष्यों, बकरों, काले हिरनों, हंसों तथा सुअरों की पीठ कर बैठकर युद्ध किया। इस प्रकार जल, स्थल तथा आकाश के पशुओं की पीठ पर, जिनमें विकृत शरीर वाले पशु भी थे, बैठी दोनों सेनाएँ आमने-सामने होकर आगे बढ़ रही थीं।

चित्रध्वजपटै राजन्नातपत्रैः सितामलैः ।
 महाधनैर्वज्रदण्डैर्व्यजनैर्बाह्रचामरैः ॥ १३ ॥
 वातोद्धूतोत्तरोष्णीषैरर्चिर्भिवर्मभूषणैः ।
 स्फुरद्भिर्विशदैः शस्त्रैः सुतरां सूर्यरश्मिभिः ॥ १४ ॥
 देवदानववीराणां ध्वजिन्यौ पाण्डुनन्दन ।
 रेजतुर्वीरमालाभिर्यादसामिव सागरौ ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

चित्र-ध्वज-पटैः—सुन्दर सजे झंडों तथा तम्बुओं से; राजन्—हे राजा; आतपत्रैः—धूप से बचने के लिए छातों से; सित-अमलैः—अत्यन्त स्वच्छ तथा श्वेत; महा-धनैः—अत्यन्त मूल्यवान्; वज्र-दण्डैः—रत्नों तथा मोतियों से बने दण्डों से; व्यजनैः—पंखों से; बाह्र-चामरैः—मोर पंखों से बने पंखों से; वात-उद्धूत—हवा से उड़ते; उत्तर-उष्णीषैः—ऊपरी तथा निचले वस्त्रों से; अर्चिभिः—तेज से; वर्म-भूषणैः—गहनों तथा ढालों से; स्फुरद्भिः—चमकते; विशदैः—तेज तथा स्वच्छ; शस्त्रैः—हथियारों से; सुतराम्—अत्यधिक; सूर्य-रश्मिभिः—सूर्य की चमचमाती किरणों से; देव-दानव-वीराणाम्—देवताओं और दानवों के दलों के सारे वीरों का; ध्वजिन्यौ—अपना-अपना झंडा लिए दोनों दलों के सैनिक; पाण्डु-नन्दन—हे महाराज पाण्डु के वंशज; रेजतुः—चमके; वीर-मालाभिः—वीरों द्वारा पहनी गई मालाओं से; यादसाम्—जलचरों के; इव—सदृश; सागरौ—दोनों समुद्र।

हे राजा! हे महाराज पाण्डु के वंशज! देवता तथा असुर दोनों ही के सैनिक चँदोवा, रंगबिरंगी झंडियों तथा बहुमूल्य रत्नों एवं मोतियों से बनी मूठ वाले छातों से अलंकृत थे। वे मोरपंख से बने तथा अन्य पंखों से सुशोभित थे। ऊपरी तथा अधोवस्त्रों के वायु में लहराने के कारण सैनिक अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे और चमचमाती धूप में उनकी ढालें, उनके गहने तथा तीक्ष्ण स्वच्छ हथियार आँखों को चौंधिया रहे थे। इस तरह सैनिकों की टोलियाँ जलचरों के दलों से युक्त दो सागरों के समान प्रतीत हो रही थीं।

वैरोचनो बलिः सङ्ख्ये सोऽसुराणां चमूपतिः ।
 यानं वैहायसं नाम कामगं मयनिर्मितम् ॥ १६ ॥

सर्वसाङ्ग्रामिकोपेतं सर्वाश्चर्यमयं प्रभो ।
अप्रतर्क्यमनिर्देश्यं दृश्यमानमदर्शनम् ॥ १७ ॥
आस्थितस्तद्विमानाच्छयं सर्वानीकाधिपैर्वृतः ।
बालव्यजनछत्राच्छयै रेजे चन्द्र इवोदये ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

वैरोचनः—विरोचन का पुत्र; बलिः—महाराज बलि; सङ्ख्ये—युद्ध में; सः—वह, इतना विख्यात; असुराणाम्—असुरों का; चमू-पतिः—सेनापति; यानम्—वायुयान; वैहायसम्—वैहायस; नाम—नामक; काम-गम्—इच्छानुसार कहीं भी उड़ने में समर्थ; मय-निर्मितम्—मय दानव द्वारा बनाया हुआ; सर्व—सारा; साङ्ग्रामिक-उपेतम्—सभी तरह के शत्रुओं से लड़ने के लिए सभी प्रकार के आवश्यक हथियारों से युक्त; सर्व-आश्चर्य-मयम्—सभी तरह से आश्चर्यपूर्ण; प्रभो—हे राजा; अप्रतर्क्यम्—वर्णन न किए जाने योग्य; अनिर्देश्यम्—अवर्णनीय; दृश्यमानम्—कभी-कभी दृश्य; अदर्शनम्—कभी-कभी अदृश्य; आस्थितः—इस तरह से आसीन; तत्—वह; विमान-अच्छयम्—सवोत्कृष्ट वायुयान; सर्व—सारा; अनीक-अधिपैः—सैनिकों के नायकों द्वारा; वृतः—घिरा; बाल-व्यजन-छत्र-अच्छयैः—सुन्दर ढंग से सजाये छातों एवं श्रेष्ठ चामरों से सुरक्षित; रेजे—चमकते हुए स्थित; चन्द्रः—चन्द्रमा; इव—सदृश; उदये—शाम को उदय होते समय ।

उस युद्ध के लिए विख्यात सेनापति विरोचन-पुत्र महाराज बलि वैहायस नामक अद्भुत वायुयान पर आसीन थे । हे राजा! यह सुन्दर ढंग से सजाया गया वायुयान मय दानव द्वारा निर्मित किया गया था और युद्ध के सभी प्रकार के हथियारों से युक्त था । यह अचिन्त्य तथा अवर्णनीय था । यह कभी दिखता तो कभी नहीं दिखता था । इस वायुयान में एक सुन्दर छाते के नीचे बैठे तथा सर्वोत्तम चमरों से पंखा झले जाते हुए एवं अपने सेनानायकों से घिरे महाराज बलि इस प्रकार लग रहे थे मानों शाम को चन्द्रमा उदय हो रहा हो और सभी दिशाओं को प्रकाशित कर रहा हो ।

तस्यासन्सर्वतो यानैर्यूथानां पतयोऽसुराः ।
नमुचिः शम्बरो बाणो विप्रचित्तिरयोमुखः ॥ १९ ॥
द्विमूर्धा कालनाभोऽथ प्रहेतिर्हेतिरिल्वलः ।
शकुनिर्भूतसन्तापो वज्रदंष्ट्रो विरोचनः ॥ २० ॥
हयग्रीवः शङ्खु शिराः कपिलो मेघदुन्दुभिः ।
तारकश्चक्रदृक्शुम्भो निशुम्भो जम्भ उत्कलः ॥ २१ ॥
अरिष्टोऽरिष्टनेमिश्च मयश्च त्रिपुराधिपः ।
अन्ये पौलोमकालेया निवातकवचादयः ॥ २२ ॥
अलब्धभागाः सोमस्य केवलं क्लेशभागिनः ।
सर्व एते रणमुखे बहुशो निर्जितामराः ॥ २३ ॥
सिंहनादान्विमुञ्चन्तः शङ्खान्दध्मुर्महारवान् ।
दृष्ट्वा सपत्नानुत्सिक्तान्बलभित्कुपितो भृशम् ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

तस्य—उसके (बलि महाराज के); आसन्—स्थित; सर्वतः—चारों ओर; यानैः—विभिन्न यानों से; यूथानाम्—सैनिकों के; पतयः—सेनानायक; असुराः—असुरगण; नमुचिः—नमुचि; शम्बरः—शम्बर; बाणः—बाण; विप्रचित्तिः—विप्रचित्ति; अयोमुखः—अयोमुख; द्विमूर्धा—द्विमूर्धा; कालनाभः—कालनाभ; अथ—भी; प्रहेतिः—प्रहेति; हेतिः—हेति; इल्वलः—इल्वल; शकुनिः—शकुनि; भूतसन्तापः—भूतसन्ताप; वज्र-दंष्ट्रः—वज्रदंष्ट्र; विरोचनः—विरोचन; हयग्रीवः—हयग्रीव; शङ्कुशिराः—शंकुशिरा; कपिलः—कपिल; मेघ-दुन्दुभिः—मेघदुन्दुभिः; तारकः—तारक; चक्रदृक्—चक्रदृक्; शुम्भः—शुम्भ; निशुम्भः—निशुम्भ; जम्भः—जम्भ; उत्कलः—उत्कल; अरिष्टः—अरिष्ट; अरिष्टनेमिः—अरिष्टनेमि; च—तथा; मयः च—तथा मय; त्रिपुराधिपः—त्रिपुराधिप; अन्ये—अन्य; पौलोम-कालेयाः—पुलोम तथा कालेय के पुत्र; निवातकवच-आदयः—निवातकवच तथा अन्य असुर; अलब्ध-भागाः—भाग लेने में सभी असमर्थ; सोमस्य—अमृत का; केवलम्—केवल; क्लेश-भागिनः—असुरों ने श्रम का हिस्सा ले लिया; सर्वे—सभी; एते—असुरगण; रण-मुखे—युद्ध के समक्ष; बहुशः—अत्यधिक बल से; निर्जित-अमराः—देवताओं को अत्यधिक कष्ट पहुँचाने वाले; सिंह-नादान्—सिंह जैसी दहाड़े; विमुञ्चन्तः—निकालते हुए; शङ्खान्—शंखों को; दध्मुः—बजाया; महा-रवान्—घोर ध्वनि करने वाले; दृष्ट्वा—देखकर; सपत्नान्—अपने प्रतियोगियों को; उत्सिक्तान्—भयानक; बलभित्—शक्ति से भयभीत (इन्द्र); कुपितः—क्रुद्ध होकर; भृशम्—अत्यधिक ।

महाराज बलि को चारों ओर से असुरों के सेनानायक तथा कप्तान घेरे थे। वे अपने-अपने रथों पर सवार थे। उनमें निम्नलिखित असुर थे—नमुचि, शम्बर, बाण, विप्रचित्ति, अयोमुख, द्विमूर्धा, कालनाभ, प्रहेति, हेति, इल्वल, शकुनि, भूतसन्ताप, वज्रदंष्ट्र, विरोचन, हयग्रीव, शंकुशिरा, कपिल, मेघदुन्दुभि, तारक, चक्रदृक्, शुम्भ, निशुम्भ, जम्भ, उत्कल, अरिष्ट, अरिष्टनेमि, त्रिपुराधिप, मय, पुलोम के पुत्र कालेय तथा निवातकवच। ये सारे असुर अमृत के अपने-अपने भाग से वञ्चित रह गये थे; उन्होंने केवल समुद्र-मन्थन का श्रम उठाया था। अब वे सुरों के विरुद्ध लड़ रहे थे और अपनी सेनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने सिंह-गर्जना के समान कोलाहल किया और जोर से अपने-अपने शंख बजाये। बलभित अर्थात् इन्द्रदेव अपने रक्तपिपासु प्रतिद्वन्द्वियों की यह स्थिति देखकर अत्यन्त कुपित हुए।

ऐरावतं दिक्करिणमारूढः शुशुभे स्वराट् ।

यथा स्रवत्प्रस्रवणमुदयाद्रिमहर्षतिः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

ऐरावतम्—ऐरावत पर; दिक्-करिणम्—सर्वत्र जा सकने वाले विशाल हाथी; आरूढः—सवार होकर; शुशुभे—देखने में अत्यन्त सुन्दर लगने लगा; स्व-राट्—इन्द्र; यथा—जिस तरह; स्रवत्—बहते हुए; प्रस्रवणम्—सुरा की लहरें; उदय-अद्रिम्—उदयगिरि पर; अहः-पतिः—सूर्य ।

ऐरावत हाथी पर जो कहीं भी जा सकता है और जो छिड़कने के लिए जल तथा सुरा को संचित रखता है, चढ़कर इन्द्र ऐसे लग रहे थे मानो उदयगिरि से जहाँ जल के आगार हैं सूर्य निकल रहा हो।

तात्पर्य : उदयगिरि पर्वत की चोटी पर अनेक झीलें हैं जहाँ से झरनों के रूप में निरन्तर जल झरता रहता है। इसी प्रकार इन्द्र का वाहन ऐरावत जल तथा सुरा संचित रखता है और इन्हें इन्द्र की ओर

छिड़कता रहता है। इस प्रकार ऐरावत की पीठ पर बैठे इन्द्र उदयगिरि से ऊपर उठते तेजस्वी सूर्य की भाँति प्रतीत हो रहे थे।

तस्यासन्सर्वतो देवा नानावाहध्वजायुधाः ।

लोकपालाः सहगणैर्वाग्वग्निरुणादयः ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

तस्य—इन्द्र के; आसन्—स्थित; सर्वतः—चारों ओर; देवाः—सारे देवता; नाना-वाह—तरह-तरह के वाहनों से; ध्वज-आयुधाः—तथा झंडों एवं हथियारों सहित; लोक-पालाः—उच्च लोकों के सारे प्रमुख; सह—साथ; गणैः—अपने-अपने पार्षदों के साथ; वायु—वायु के अधिष्ठाता देवता; अग्नि—अग्नि के अधिष्ठाता देवता; वरुण—जल के अधिष्ठाता देवता; आदयः—इन्द्र को घेरे हुए सभी।

देवतागण स्वर्ग के राजा इन्द्र को घेरे हुए थे। वे नाना प्रकार के यानों पर सवार थे और झंडों तथा आयुधों से सज्जित थे। उपस्थित देवताओं में वायु, अग्नि, वरुण तथा विभिन्न लोकों के अन्य शासक तथा उनके पार्षद थे।

तेऽन्योन्यमभिसंसृत्य क्षिपन्तो मर्मभिर्मिथः ।

आह्वयन्तो विशन्तोऽग्रे युयुधुर्द्वन्द्वयोधिनः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

ते—वे (देवता तथा दानव); अन्योन्यम्—एक दूसरे को; अभिसंसृत्य—आमने-सामने आकर; क्षिपन्तः—एक दूसरे को प्रताड़ित करते; मर्मभिः मिथः—एक दूसरे के हृदयों को पीड़ा पहुँचाते; आह्वयन्तः—एक दूसरे को सम्बोधित करते; विशन्तः—युद्धभूमि में प्रवेश करके; अग्रे—सामने; युयुधुः—लड़ाई की; द्वन्द्व-योधिनः—दो-दो प्रतिद्वन्दी योद्धा।

देवता तथा दानव एक दूसरे के सम्मुख आ गये और मर्मभेदी वचनों से एक दूसरे को धिक्कारने लगे। तब वे निकट आकर जोड़ियों के रूप में आमने-सामने लड़ने लगे।

युयोध बलिरिन्द्रेण तारकेण गुहोऽस्यत ।

वरुणो हेतिनायुध्यन्मित्रो राजन्प्रहेतिना ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

युयोध—भिड़ गये; बलिः—महाराज बलि; इन्द्रेण—इन्द्र से; तारकेण—तारक से; गुहः—कार्तिकेय; अस्यत—युद्ध में व्यस्त; वरुणः—वरुण देव; हेतिना—हेति से; अयुध्यत्—एक दूसरे से लड़े; मित्रः—मित्र देवता; राजन्—हे राजा; प्रहेतिना—प्रहेति से।

हे राजा! महाराज बलि इन्द्र से, कार्तिकेय तारक से, वरुण हेति से तथा मित्र प्रहेति से भिड़ गये।

यमस्तु कालनाभेन विश्वकर्मा मयेन वै ।

शम्बरो युयुधे त्वष्ट्रा सवित्रा तु विरोचनः ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

यमः—यमराज; तु—निस्सन्देह; कालनाभेन—कालनाभ से; विश्वकर्मा—विश्वकर्मा; मयेन—मय से; वै—निस्सन्देह; शम्बरः—शम्बर ने; युयुधे—युद्ध किया; त्वष्टा—त्वष्टा से; सवित्रा—सूर्यदेव से; तु—निस्सन्देह; विरोचनः—विरोचन असुर ने।

यमराज कालनाभ से, विश्वकर्मा मय दानव से, त्वष्टा शम्बर से तथा सूर्यदेव विरोचन से लड़ने लगे।

अपराजितेन नमुचिरश्विनौ वृषपर्वणा ।

सूर्यो बलिसुतैर्देवो बाणज्येष्ठैः शतेन च ॥ ३० ॥

राहुणा च तथा सोमः पुलोम्ना युयुधेऽनिलः ।

निशुम्भशुम्भयोर्देवी भद्रकाली तरस्विनी ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

अपराजितेन—अपराजित देवता से; नमुचिः—नमुचि असुर ने; अश्विनौ—अश्विनी कुमारों ने; वृषपर्वणा—वृषपर्वा दैत्य के साथ; सूर्यः—सूर्य देव ने; बलि-सुतैः—बलि के पुत्रों के साथ; देवः—देवता; बाण-ज्येष्ठैः—जिनमें बाण प्रमुख है; शतेन—एक सौ; च—तथा; राहुणा—राहु से; च—भी; तथा—और; सोमः—चन्द्रदेव ने; पुलोम्ना—पुलोमा के साथ; युयुधे—युद्ध किया; अनिलः—वायु देव; निशुम्भ—निशुम्भ असुर; शुम्भयोः—शुम्भ के साथ; देवी—देवी दुर्गा ने; भद्रकाली—भद्रकाली; तरस्विनी—अत्यन्त शक्तिशाली।

अपराजित देवता ने नमुचि असुर के साथ तथा दोनों अश्विनी कुमारों ने वृषपर्वा के साथ युद्ध किया। सूर्यदेव महाराज बलि के सौ पुत्रों से भिड़ गये जिनमें बाण प्रमुख था। चन्द्रदेव ने राहु से लड़ाई की। वायुदेव ने पुलोमा से तथा शुम्भ और निशुम्भ ने अत्यन्त शक्तिशाली माया भद्रकाली नामक दुर्गादेवी से युद्ध किया।

वृषाकपिस्तु जम्भेन महिषेण विभावसुः ।

इल्वलः सह वातापिर्ब्रह्मापुत्रैररिन्दम ॥ ३२ ॥

कामदेवेन दुर्मर्ष उत्कलो मातृभिः सह ।

बृहस्पतिश्चोशनसा नरकेण शनैश्चरः ॥ ३३ ॥

मरुतो निवातकवचैः कालेयैर्वसवोऽमराः ।

विश्वेदेवास्तु पौलोमै रुद्राः क्रोधवशैः सह ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

वृषाकपिः—शिवजी; तु—निस्सन्देह; जम्भेन—जम्भ के साथ; महिषेण—महिषासुर से; विभावसुः—अग्निदेव; इल्वलः—इल्वल असुर; सह वातापिः—उसके भाई वातापि से; ब्रह्मा-पुत्रैः—ब्रह्मा के पुत्रों के साथ, यथा वशिष्ठ से; अरिम्-दम—हे शत्रुओं के दमनकर्ता, महाराज परीक्षित; कामदेवेन—कामदेव से; दुर्मर्षः—दुर्मर्ष; उत्कलः—उत्कल ने; मातृभिः सह—मातृका नामक देवियों के साथ; बृहस्पतिः—बृहस्पति देवता ने; च—तथा; उशनसा—शुक्राचार्य से; नरकेण—नरकासुर से; शनैश्चरः—शनि देवता ने; मरुतः—वायु के देवता; निवातकवचैः—निवातकवच असुर से; कालेयैः—कालकेयों से; वसवः—वसुओं ने युद्ध किया; विश्वेदेवाः—विश्वेदेवों ने; तु—निस्सन्देह; पौलोमैः—पौलोमों के साथ; रुद्राः—ग्यारह रुद्रों ने; क्रोधवशैः सह—क्रोधवश दानवों के साथ।

हे अरिन्दम महाराज परीक्षित! शिवजी ने जम्भ से तथा विभावसु ने महिषासुर से युद्ध किया। इल्वल ने, अपने भाई वातापि सहित, ब्रह्मा के पुत्रों से युद्ध किया। दुर्मर्ष कामदेव से, उत्कल मातृका नामक देवियों से, बृहस्पति शुक्राचार्य से तथा शनैश्वर नरकासुर से युद्ध में भिड़ गए। मरुताण निवातकवच से, वसुओं ने दैत्य कालकेयों से, विश्वेदेवों ने पौलोमों असुरों से तथा रुद्रगणों ने क्रुद्ध क्रोधवश असुरों से युद्ध किया।

त एवमाजावसुराः सुरेन्द्रा

द्वन्द्वेन संहत्य च युध्यमानाः ।

अन्योन्यमासाद्य निजघ्नुरोजसा

जिगीषवस्तीक्ष्णशरासितोमरैः ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

ते—वे सभी; एवम्—इस प्रकार; आजौ—युद्धक्षेत्र में; असुराः—असुरगण; सुर-इन्द्राः—तथा देवता; द्वन्द्वेन—दो-दो करके; संहत्य—परस्पर मिलकर; च—तथा; युध्यमानाः—युद्ध करते हुए; अन्योन्यम्—एकदूसरे से; आसाद्य—पास आकर; निजघ्नुः—हथियारों से मार डाला; ओजसा—अत्यन्त बलपूर्वक; जिगीषवः—विजय की कामना करते हुए; तीक्ष्ण—तेज; शर—बाणों से; असि—तलवारों से; तोमरैः—भालों से।

ये सारे देवता तथा असुर लड़ने के उत्साह से युद्धभूमि में एकत्र हुए और अत्यन्त बलपूर्वक एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। वे सब विजय की कामना करते हुए जोड़े बनाकर लड़ने लगे और तेज बाणों, तलवारों तथा भालों से बुरी तरह एक दूसरे को मारने लगे।

भुशुण्डिभिश्चक्रगदर्षिपट्टिशैः

शक्त्युल्मुकैः प्रासपरश्वधैरपि ।

निस्त्रिंशभल्लैः परिघैः समुद्गरैः

सभिन्दिपालैश्च शिरांसि चिच्छिदुः ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

भुशुण्डिभिः—भुशुण्डि नामक हथियारों से; चक्र—चक्र से; गदा—गदा से; ऋष्टि—ऋष्टि अस्त्रों से; पट्टिशैः—पट्टिश शस्त्र से; शक्ति—शक्ति शस्त्रों से; उल्मुकैः—उल्मुक नामक शस्त्रों से; प्रास—प्रास शस्त्र से; परश्वधैः—परश्वध शस्त्रों से; अपि—भी; निस्त्रिंश—निस्त्रिंश शस्त्रों से; भल्लैः—भालों से; परिघैः—परिघों शस्त्र से; स-मुद्गरैः—मुद्गरों से; स-भिन्दिपालैः—भिन्दिपाल शस्त्रों से; च—भी; शिरांसि—सिरों को; चिच्छिदुः—काट लिया।

उन्होंने भुशुण्डि, चक्र, गदा, ऋष्टि, पट्टिश, शक्ति, उल्मुक, प्रास, परश्वध, निस्त्रिंश, भाला, परिघ, मुद्गर तथा भिन्दिपाल नामक हथियारों से एक दूसरे के सिर काट डाले।

गजास्तुरङ्गाः सरथाः पदातयः

सारोहवाहा विविधा विखण्डिताः ।

निकृत्तबाहूरुशिरोधराङ्घ्रय-

श्छिन्नध्वजेष्वासतनुत्रभूषणाः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

गजाः—हाथी; तुरङ्गाः—घोड़े; स-रथाः—रथों सहित; पदातयः—पैदल सैनिक; सारोह-वाहाः—सवारों सहित वाहन; विविधाः—विविध प्रकार के; विखण्डिताः—खण्ड-खण्ड हुए; निकृत्त-बाहु—कटी हुई भुजाएँ; ऊरु—जाँघें; शिरोधर—गर्दन; अङ्घ्रयः—टांगे; छिन्न—कटकर अलग; ध्वज—झंडा; इष्वास—धनुष; तनुत्र—कवच; भूषणाः—गहने, आभूषण।

हाथी, घोड़े, रथ, सारथी, पैदल सेना तथा सवारों सहित विविध प्रकार के वाहन ध्वस्त हो गये। सैनिकों की भुजाएँ, जाँघें, गर्दन तथा टांगे कट गई और उनके झंडे, धनुष, कवच तथा आभूषण छिन्न-भिन्न हो गये।

तेषां पदाघातरथाङ्गचूर्णिता-

दायोधनादुल्बण उत्थितस्तदा ।

रेणुर्दिशः खं द्युमणिं च छादयन्

न्यवर्ततासृक्स्त्रुतिभिः परिप्लुतात् ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

तेषाम्—युद्धक्षेत्र में लगे सारे; पदाघात—असुरों तथा देवताओं के पैरों के प्रहार से; रथ-अङ्ग—तथा रथों के पहिए; चूर्णितात्—चूर्णित हुए; आयोधनात्—युद्धभूमि से; उल्बणः—अत्यन्त शक्तिशाली; उत्थितः—उठते हुए; तदा—उस समय; रेणुः—धूल के कण; दिशः—सभी दिशाएँ; खम्—बाह्य आकाश; द्युमणिम्—सूर्य तक; च—भी; छादयन्—ढकते हुए; न्यवर्तत—हवा में तैरना बन्द कर दिया; असृक्—रक्त के; स्त्रुतिभिः—कणों के द्वारा; परिप्लुतात्—दूर दूर तक छिड़के जाने से।

भूमि पर देवताओं तथा असुरों के पाँवों तथा रथों के पहियों के आघात से आकाश में तेजी से धूल के कण उड़ने लगे और धूल का बादल छा गया जिससे सूर्य तक का सारा बाह्य आकाश चारों ओर से ढक गया। किन्तु जब धूल कणों के पश्चात् रक्त की बूँदें सारे आकाश में फुहार की तरह उठने लगीं तो धूल के बादलों का आकाश में मँडराना बन्द हो गया।

तात्पर्य : धूल के बादल ने सारे क्षितिज को ढक लिया, किन्तु जब रक्त की बूँदों की फुहार सूर्य तक पहुँच गई तो आकाश में धूल के बादलों का मँडराना बन्द हो गया। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि यद्यपि रक्त सूर्य तक पहुँच गया बताया गया है, किन्तु यह नहीं कहा गया है कि रक्त चन्द्रमा तक पहुँचा। अतएव स्पष्ट है कि पृथ्वी से निकटतम ग्रह सूर्य है, चन्द्रमा नहीं, जैसा कि श्रीमद्भागवत में अन्यत्र बताया गया है। हम इसका उल्लेख कई स्थानों पर कर चुके हैं। पहले सूर्य, फिर चन्द्रमा, तब मंगल, बृहस्पति इत्यादि हैं। सूर्य पृथ्वी की सतह से ९,३०,००,००० मील ऊपर माना जाता है और

श्रीमद्भागवत से यह पता चलता है कि चन्द्रमा सूर्य से १६,००,००० मील ऊपर है। अतएव पृथ्वी तथा चन्द्रमा की दूरी लगभग ९,५०,००,००० मील है। इस तरह यदि कोई अन्तरिक्ष यान १८,००० मील प्रति घंटे की गति से यात्रा करे तो वह चार दिनों में चाँद तक कैसे पहुँचेगा? इस गति से चाँद तक पहुँचने में कम से कम सात मास लगेंगे। अतएव यह कहना कि अन्तरिक्ष यान चार दिनों में चाँद तक पहुँच गया है, असम्भव है।

शिरोभिरुद्धतकिरीटकण्डलैः

संरम्भदृग्भिः परिदष्टदच्छदैः ।

महाभुजैः साभरणैः सहायुधैः

सा प्रास्तृता भूः करभोरुभिर्बभौ ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ

शिरोभिः—सिरों से; उद्धृत—पृथक्, फैली हुई; किरीट—मुकुट; कुण्डलैः—तथा कान के आभूषणों से; संरम्भ-दृग्भिः—क्रोध से घूरती आँखें (यद्यपि सिर शरीर से छिन्न थे); परिदष्ट—दाँतों से काटे गये; दच्छदैः—ओठ; महा-भुजैः—बड़ी-बड़ी बाँहों से; स-आभरणैः—आभूषणों से सजी; सह-आयुधैः—तथा हाथों में हथियार लिये, यद्यपि हाथ छिन्न हो चुके थे; सा—वह युद्धक्षेत्र; प्रास्तृता—बिखरे; भूः—युद्धक्षेत्र; करभ-ऊरुभिः—पांव तथा जाँघें हाथी की सूँडों जैसी; बभौ—हो गई।

युद्ध के दौरान युद्धभूमि वीरों के कटे सिरों से पट गई। उनकी आँखें अब भी घूर रही थीं और क्रोध से उनके दाँत उनके होठों से लगे हुए थे। इन छिन्न सिरों के मुकुट तथा कुण्डल बिखर गये थे। इसी प्रकार आभूषणों से सज्जित तथा विविध हथियार पकड़े हुई अनेक भुजाएँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं और हाथी की सूँडों जैसे अनेक टांगे तथा जाँघें भी इसी तरह बिखरी हुई थीं।

कबन्धास्तत्र चोत्पेतुः पतितस्वशिरोऽक्षिभिः ।

उद्यतायुधदोर्दण्डैराधावन्तो भटान्मृधे ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

कबन्धाः—धड़; तत्र—वहाँ (युद्धभूमि में); च—भी; उत्पेतुः—उत्पन्न; पतित—गिरा हुआ; स्व-शिरः-अक्षिभिः—सिर की आँखों से; उद्यत—उठाये; आयुध—हथियारों से युक्त; दोर्दण्डैः—जिसकी भुजाएँ; आधावन्तः—की ओर दौड़ती हुई; भटान्—सैनिक; मृधे—युद्धभूमि में।

उस युद्धभूमि में शीघ्ररहित अनेक धड़ उत्पन्न हो गए थे। वे प्रेततुल्य धड़ अपने हाथों में हथियार लिए, पड़े हुए सिरों की आँखों से देखकर शत्रु सैनिकों पर आक्रमण कर रहे थे।

तात्पर्य : ऐसा प्रतीत होता है कि युद्धक्षेत्रों में मारे गये वीर तुरन्त ही प्रेत बन गये थे। यद्यपि उनके

सिर उनके शरीरों से कटकर अलग हो गये थे, किन्तु नये धड़ पैदा हो गये थे और ये नए धड़ कटे हुए सिरों की आँखों से देखकर शत्रु पर आक्रमण करने लगे। दूसरे शब्दों में, युद्ध में सम्मिलित होने के लिए अनेक प्रेत उत्पन्न हो गये जिससे युद्धक्षेत्र में अनेक नए धड़ प्रकट हो गए।

बलिर्महेन्द्रं दशभिस्त्रिभिरैरावतं शरैः ।

चतुर्भिश्चतुरो वाहानेकेनारोहमाच्छ्रयत् ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ

बलिः—महाराज बलि; महा-इन्द्रम्—स्वर्ग का राजा; दशभिः—दस; त्रिभिः—तीन; ऐरावतम्—इन्द्र के वाहन ऐरावत को; शरैः—बाणों से; चतुर्भिः—चार बाणों से; चतुरः—चार; वाहान्—सवारों को; एकेन—एक से; आरोहम्—चालक को; आच्छ्रयत्—वार किया।

महाराज बलि ने तब दस बाणों से इन्द्र पर तथा तीन बाणों से इन्द्र के वाहन ऐरावत पर वार किया। उन्होंने चार बाणों से ऐरावत के पाँवों की रक्षा करने वाले चार घुड़सवारों पर आक्रमण किया और एक बाण से उसके चालक पर।

तात्पर्य : वाहान् उन घुड़सवारों का सूचक है, जो हाथी के पैरों की रक्षा कर रहे थे। सैन्य व्यवस्था के अनुसार सेनापति को ले जाने वाले हाथी के पाँवों की भी रक्षा की जाती थी।

स तानापततः शक्रस्तावद्भिः शीघ्रविक्रमः ।

चिच्छेद निशितैर्भल्लैरसम्प्राप्तान्हसन्निव ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ

सः—वह (इन्द्र); तान्—उन बाणों को; आपततः—उसकी ओर बढ़ते और गिरते हुए; शक्रः—इन्द्र; तावद्भिः—तुरन्त; शीघ्र-विक्रमः—तुरन्त सताये जाने के लिए अभ्यस्त; चिच्छेद—खण्ड-खण्ड कर डाला; निशितैः—अत्यन्त तेज; भल्लैः—अन्य प्रकार के बाण से; असम्प्राप्तान्—शत्रु के बाण पहुँचने से पहले; हसन् इव—मानो हँस रहा हो।

इसके पूर्व कि बलि महाराज के बाण स्वर्ग के राजा इन्द्र तक पहुँचे, बाणों के चलाने में पटु इन्द्र ने हँसते हुए एक अन्य प्रकार के अत्यन्त तीक्ष्ण भल्ल नामक बाण से उन्हें काट डाला।

तस्य कर्मोत्तमं वीक्ष्य दुर्मर्षः शक्तिमाददे ।

तां ज्वलन्तीं महोल्काभां हस्तस्थामच्छिनद्धरिः ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ

तस्य—इन्द्र के; कर्म-उत्तमम्—सैन्यकला में अत्यन्त दक्ष कार्य को; वीक्ष्य—देखकर; दुर्मर्षः—अत्यन्त क्रुद्ध होकर; शक्तिम्—शक्ति नामक हथियार; आददे—ले लिया; ताम्—उस हथियार को; ज्वलन्तीम्—जलती आग; महा-उल्का-आभाम्—महान् अग्नि पुंज की भाँति प्रकट होते हुए; हस्त-स्थाम्—जो अभी बलि के हाथ में ही था; अच्छिनत्—खण्ड-खण्ड कर डाला; हरिः—इन्द्र ने।

जब बलि महाराज ने इन्द्र के दक्ष सैन्य कार्यकलापों को देखा तो वे अपना क्रोध रोक न सके। उन्होंने शक्ति नामक एक दूसरा हथियार ग्रहण किया जो महान् अग्नि पुंज की भाँति ज्वलित हो रहा था। किन्तु इन्द्र ने इसे बलि के हाथ से छूटने के पूर्व ही खण्ड-खण्ड कर दिया।

ततः शूलं ततः प्रासं ततस्तोमरमृष्टयः ।

यद्यच्छस्त्रं समादद्यात्सर्वं तदच्छिनद्विभुः ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; शूलम्—भाला; ततः—तत्पश्चात्; प्रासम्—प्रास; ततः—तत्पश्चात्; तोमरम्—तोमर; ऋष्टयः—ऋष्टि नामक हथियारों; यत् यत्—जो-जो; शस्त्रम्—हथियार; समादद्यात्—बलि ने प्रयोग करने चाहे; सर्वम्—उन सब को; तत्—वे ही हथियार; अच्छिनत्—खण्ड-खण्ड कर दिये; विभुः—महान् इन्द्र ने।

तत्पश्चात् बलि महाराज ने एक-एक करके भाला, प्रास, तोमर, ऋष्टि तथा अन्य हथियार चलाये, किन्तु वे जो भी हथियार लेते थे, उन्हें महान् इन्द्र तुरन्त ही खण्ड-खण्ड कर देते थे।

ससर्जाथासुरीं मायामन्तर्धानगतोऽसुरः ।

ततः प्रादुरभूच्छैलः सुरानीकोपरि प्रभो ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ

ससर्ज—छोड़ा; अथ—अब; आसुरीम्—दानवी; मायाम्—माया को; अन्तर्धान—दृष्टि से ओझल; गतः—जाकर; असुरः—बलि महाराज; ततः—तत्पश्चात्; प्रादुरभूत्—प्रकट हुआ; शैलः—एक विशाल पर्वत; सुर-अनीक-उपरि—देवताओं की सेना के सिरोंके ऊपर; प्रभो—हे स्वामी।

हे राजा! तब बलि महाराज अदृश्य हो गये और उन्होंने आसुरी माया का सहारा लिया। तब देवताओं की सेना के सिरों के ऊपर माया से उत्पन्न एक विशाल पर्वत प्रकट हुआ।

ततो निपेतुस्तरवो दह्यमाना दवाग्निना ।

शिलाः सटङ्कशिखराश्चूर्णयन्त्यो द्विषद्वलम् ॥ ४६ ॥

शब्दार्थ

ततः—उस महान् पर्वत से; निपेतुः—गिरने लगे; तरवः—बड़े-बड़े वृक्ष; दह्यमानाः—अग्नि से जलकर; दव-अग्निना—जंगल की आग से; शिलाः—तथा पत्थर; स-टङ्क-शिखराः—पत्थर की कुल्हाड़ी जैसी तीक्ष्ण धार वाले; चूर्णयन्त्यः—चूर-चूर करते; द्विषत्-बलम्—शत्रुओं की शक्ति को।

उस पर्वत से दावाग्नि से जलते हुए वृक्ष गिरने लगे। उससे पत्थर की कुल्हाड़ी जैसी तीक्ष्ण धार वाले पत्थर-खण्ड भी गिरने लगे जिससे देवताओं के सैनिकों के सिर चकनाचूर हो गये।

महोरगाः समुत्पेतुर्दन्दशूकाः सवृश्चिकाः ।

सिंहव्याघ्रवराहाश्च मर्दयन्तो महागजाः ॥ ४७ ॥

शब्दार्थ

महा-उरगाः—बड़े-बड़े साँप; समुत्पेतुः—उन पर गिरने लगे; दन्दशूकाः—अन्य विषैले पशु तथा कीड़े; स-वृश्चिकाः—बिच्छुओं सहित; सिंह—शेर; व्याघ्र—बाघ; वराहाः च—तथा जंगली सूअर; मर्दयन्तः—मर्दन करते हुए; महा-गजाः—बड़े-बड़े हाथी ।

देवताओं के सैनिकों पर बिच्छू, बड़े-बड़े सर्प तथा अन्य अनेक विषैले पशुओं के साथ-साथ सिंह, बाघ, सूअर तथा बड़े-बड़े हाथी गिरने लगे और हर वस्तु को चकनाचूर करने लगे ।

यातुधान्यश्च शतशः शूलहस्ता विवाससः ।

छिन्धि भिन्धीति वादिन्यस्तथा रक्षोगणाः प्रभो ॥ ४८ ॥

शब्दार्थ

यातुधान्यः—मानव भक्षी असुरनियाँ; च—तथा; शतशः—सैकड़ों; शूल-हस्ताः—सभी हाथों में त्रिशूल लिए; विवाससः—पूर्ण नग्न; छिन्धि—खण्ड-खण्ड कर डालो; भिन्धि—छेद डालो; इति—इस प्रकार; वादिन्यः—बातें करते; तथा—इस तरह; रक्षः-गणाः—राक्षसगण; प्रभो—हे राजा ।

हे राजा! तब कई सौ नरभक्षी नर और मादा असुर, जो पूर्णतया नग्न थे और अपने हाथों में त्रिशूल लिए थे “काट डालो! छेद डालो!” के नारे लगाते हुए प्रकट हुए ।

ततो महाघना व्योम्नि गम्भीरपरुषस्वनाः ।

अङ्गारान्मुमुचुर्वातैराहताः स्तनयित्त्वः ॥ ४९ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; महा-घनाः—बड़े-बड़े बादल; व्योम्नि—आकाश में; गम्भीर-परुष-स्वनाः—अत्यन्त गहरी गड़गड़ाहट उत्पन्न करते; अङ्गारान्—अंगारों को; मुमुचुः—गिराया; वातैः—प्रबल वायु से; आहताः—प्रताड़ित; स्तनयित्त्वः—मेघ गर्जना से ।

तब आकाश में प्रबल वायु से प्रताड़ित घनघोर घटाएँ प्रकट हो आईं । वे गम्भीर गर्जना करती हुई जलते कोयलों के अंगारे बरसाने लगीं ।

सृष्टो दैत्येन सुमहान्वह्निः श्वसनसारथिः ।

सांवर्तक इवात्युग्रो विबुधध्वजिनीमधाक् ॥ ५० ॥

शब्दार्थ

सृष्टः—उत्पन्न; दैत्येन—असुर (बलि महाराज) द्वारा; सु-महान्—अत्यन्त विशाल, विनाशकारी; वह्निः—अग्नि; श्वसन-सारथिः—तेज हवा के द्वारा ले जाई जाकर; सांवर्तकः—सांवर्तक नामक अग्नि जो प्रलय के समय प्रकट होती है; इव—सदृश; अति—अत्यन्त; उग्रः—प्रचण्ड; विबुध—देवताओं के; ध्वजिनीम्—सैनिकों को; अधाक्—जलाकर राख कर दिया ।

महाराज बलि द्वारा उत्पन्न की गई अत्यन्त संहारक अग्नि देवताओं के सभी सैनिकों को जलाने लगी । यह अग्नि तेज बहती हवाओं के साथ उस सांवर्तक अग्नि जैसी प्रतीत हो रही थी जो प्रलय के समय प्रकट होती है ।

ततः समुद्र उद्वेलः सर्वतः प्रत्यदृश्यत ।
प्रचण्डवातैरुद्धूततरङ्गावर्तभीषणः ॥ ५१ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; समुद्रः—समुद्र; उद्वेलः—क्षुब्ध होकर; सर्वतः—चारों ओर; प्रत्यदृश्यत—हर एक की दृष्टि के सामने दिखने लगा; प्रचण्ड—भयानक; वातैः—हवा से; उद्धूत—क्षुब्ध; तरङ्ग—लहरों का; आवर्त—भँवर; भीषणः—भीषण।

तत्पश्चात् हवाओं के प्रचण्ड झकड़ों से क्षुब्ध समुद्री लहरें तथा भँवर सब की आँखों के सामने एक भीषण बाढ़ के रूप में चारों ओर प्रकट हो आए।

एवं दैत्यैर्महामायैरलक्ष्यगतिभी रणे ।
सृज्यमानासु मायासु विषेदुः सुरसैनिकाः ॥ ५२ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; दैत्यैः—असुरों के द्वारा; महा-मायैः—मायावी कार्यों में दक्ष; अलक्ष्य-गतिभिः—किन्तु अदृश्य; रणे—युद्ध में; सृज्यमानासु मायासु—ऐसे मायावी वातावरण की सृष्टि होने से; विषेदुः—खिन्न हो गये; सुर-सैनिकाः—देवताओं के सैनिक।

जब ऐसे मायावी कार्यों में दक्ष अदृश्य असुरों द्वारा युद्ध में इस तरह का जादुई वातावरण उत्पन्न किया जा रहा था, तो देवताओं के सैनिक खिन्न हो गये।

न तत्प्रतिविधिं यत्र विदुरिन्द्रादयो नृप ।
ध्यातः प्रादुरभूत्तत्र भगवान्विश्वभावनः ॥ ५३ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; तत्-प्रतिविधिम्—ऐसे मायावी वातावरण की प्रतिक्रिया; यत्र—जहाँ; विदुः—समझ सके; इन्द्र-आदयः—इन्द्र इत्यादि देवता; नृप—हे राजा; ध्यातः—ध्यान किये जाने पर; प्रादुरभूत्—प्रकट हुए; तत्र—उस स्थान पर; भगवान्—भगवान्; विश्व-भावनः—ब्रह्माण्ड के स्रष्टा।

हे राजा! जब देवताओं को असुरों के कार्यों का निराकरण कर पाने का कोई उपाय न सूझा तो उन्होंने ब्रह्माण्ड के स्रष्टा भगवान् का पूर्ण मनोयोग से ध्यान किया और वे तुरन्त ही प्रकट हो गये।

ततः सुपर्णासकृताङ्घ्रिपल्लवः
पिशङ्गवासा नवकञ्जलोचनः ।
अदृश्यताष्ट्रायुधबाहरुल्लस-
च्छ्रीकौस्तुभानर्घ्यकिरीटकुण्डलः ॥ ५४ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; सुपर्ण-अंस-कृत-अङ्घ्रि-पल्लवः—भगवान्, जिनके चरणकमल गरुड़ के दोनों कंधों पर फैले रहते हैं; पिशङ्ग-वासाः—जिनके वस्त्र पीले हैं; नव-कञ्ज-लोचनः—तथा जिनके नेत्र नवीन खिले कमल की पंखुड़ियों के तुल्य हैं; अदृश्यत—दृष्टिगोचर हो गए (देवताओं के समक्ष); अष्ट-आयुध—आठ प्रकार के आयुधों से युक्त; बाहुः—बाहें; उल्लसत्—झलमलाते; श्री—लक्ष्मी; कौस्तुभ—कौस्तुभ मणि; अनर्घ्य—अगणनीय मूल्य का; किरीट—मुकुट; कुण्डलः—कुण्डल पहने।

नवविकसित कमल की पंखुड़ियों सदृश आँखों वाले भगवान् गरुड़ की पीठ पर बैठे थे और गरुड़ के कंधों पर अपने चरणकमल फैलाये थे। वे पीत वस्त्र धारण किये, कौस्तुभ मणि तथा लक्ष्मीजी से सुसज्जित एवं अमूल्य मुकुट तथा कुण्डल पहने अपनी आठों भुजाओं में विविध आयुध धारण किये देवताओं को दृष्टिगोचर हुए।

तस्मिन्प्रविष्टेऽसुरकूटकर्मजा

माया विनेशुर्महिना महीयसः ।

स्वप्नो यथा हि प्रतिबोध आगते

हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम् ॥ ५५ ॥

शब्दार्थ

तस्मिन् प्रविष्टे—भगवान् के प्रवेश करने पर; असुर—असुरों का; कूट-कर्म-जा—जादू भरे कार्यों से; माया—छद्म अभिव्यक्ति; विनेशुः—तुरन्त नष्ट हो गये; महिना—श्रेष्ठ शक्ति द्वारा; महीयसः—भगवान् का जो महानतम से भी महान् हैं; स्वप्नः—सपने; यथा—जिस तरह; हि—निस्सन्देह; प्रतिबोधे—जगने पर; आगते—आ गया है; हरि-स्मृतिः—भगवान् की स्मृति; सर्व-विपत्—सभी प्रकार की विपदाओं से; विमोक्षणम्—तुरन्त मुक्त कर देती है।

जिस प्रकार स्वप्न देखने वाले के जगते ही स्वप्न के भय दूर हो जाते हैं उसी तरह युद्धभूमि में भगवान् के प्रवेश करते ही उनकी दिव्य शक्ति से असुरों की जादूगरी से उत्पन्न माया विलीन हो गई। निस्सन्देह, भगवान् के स्मरण मात्र से मनुष्य सारे संकटों से मुक्त हो जाता है।

दृष्ट्वा मृधे गरुडवाहमिभारिवाह

आविध्य शूलमहिनोदथ कालनेमिः ।

तल्लीलया गरुडमूर्ध्नि पतद्गृहीत्वा

तेनाहननृप सवाहमरिं त्र्यधीशः ॥ ५६ ॥

शब्दार्थ

दृष्ट्वा—देखकर; मृधे—युद्धस्थल में; गरुड-वाहम्—गरुड़ द्वारा ले जाए गए भगवान्; इभारि-वाहः—महान् सिंह द्वारा ले गया असुर; आविध्य—घुमा कर; शूलम्—त्रिशूल को; अहिनोत्—उस पर छोड़ा; अथ—इस प्रकार; कालनेमिः—कालनेमि असुर ने; तत्—भगवान् पर असुर द्वारा ऐसा प्रहार; लीलया—आसानी से; गरुड-मूर्ध्नि—गरुड़ के सिर पर; पतत्—गिरते हुए; गृहीत्वा—तुरन्त सहज रूप से पकड़ कर; तेन—उसी हथियार से; अहनत्—मार डाला; नृप—हे राजा; स-वाहम्—अपने वाहन समेत; अरिम्—शत्रु को; त्रि-अधीशः—तीनों लोकों के स्वामी भगवान् ने।

हे राजा! जब सिंह पर आरूढ़ कालनेमि दैत्य ने देखा कि गरुड़वाहन भगवान् युद्धक्षेत्र में हैं, तो उसने तुरन्त अपना त्रिशूल निकाल लिया और उसे गरुड़ के सिर पर चलाया। किन्तु तीनों

लोकों के स्वामी भगवान् हरि ने तुरन्त ही उस त्रिशूल को पकड़ लिया और उसी हथियार से अपने शत्रु कालनेमि को उसके वाहन सिंह समेत मार डाला।

तात्पर्य : इस प्रसंग में श्रील मध्वाचार्य कहते हैं—

कालनेम्यादयः सर्वे करिणा निहता अपि।

शुक्रेणोज्जीविताः सन्तः पुनस्तेनैव पातिताः ॥

“कालनेमि तथा अन्य सारे असुर भगवान् हरि द्वारा मार डाले गये और जब असुरों को उनके गुरु शुक्राचार्य ने पुनः जीवित कर दिया तो भगवान् ने उन्हें पुनः मार डाला।”

माली सुमाल्यतिबलौ युधि पेततुर्य-

चक्रेण कृत्तशिरसावथ माल्यवांस्तम् ।

आहत्य तिग्मगदयाहनदण्डजेन्द्रं

तावच्छिरोऽच्छिनदरेन्दतोऽरिणाद्यः ॥ ५७ ॥

शब्दार्थ

माली सुमाली—माली तथा सुमाली नामक दो असुर; अति-बलौ—अत्यन्त शक्तिशाली; युधि—युद्धस्थल में; पेततुः—गिर गये; यत्-चक्रेण—जिसके चक्र से; कृत्त-शिरसौ—छिन्न सिरों वाले; अथ—तत्पश्चात्; माल्यवान्—माल्यवान्; तम्—भगवान् को; आहत्य—आक्रमण करके; तिग्म-गदया—अत्यन्त नुकीली गदा से; अहनत्—मार डालना चाहा; अण्ड-ज-इन्द्रम्—अण्डों से उत्पन्न पक्षियों के राजा, गरुड़ ने; तावत्—उस समय; शिरः—सिर; अच्छिनत्—काट लिया; अरेः—शत्रु का; नदतः—शेर जैसे दहाड़ता; अरिणा—चक्र से; आद्यः—आदि भगवान् ने।

तत्पश्चात् भगवान् ने माली तथा सुमाली नामक दो शक्तिमान असुरों को मारा। उन्होंने अपने चक्र से उनके सिर काट दिये। तब एक अन्य असुर माल्यवान ने भगवान् पर आक्रमण किया। उसने अपनी नुकीली गदा से, सिंह की भाँति गर्जना करते हुए, अण्डो से उत्पन्न पक्षिराज गरुड़ पर आक्रमण किया। किन्तु आदि पुरुष भगवान् ने अपने चक्र का प्रयोग करते हुए उस शत्रु के सिर को भी काट दिया।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कंध के अन्तर्गत “देवताओं तथा असुरों के बीच युद्ध” नामक दसवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।